प्रिय दोस्तो,

जो हमें पढ़ाते-सिखाते हैं, उनको याद करने के लिए साल में एक दिन तय है न? शिक्षक दिवस। ऐसे और भी कई दिन याद आ जाएँगे। चाहो तो उनकी एक सूची ही बना डालो। इसमें एकाध दिवस ऐसा भी होगा, जिसे मनाना चाहिए या नहीं, इसी को लेकर विवाद मचता है, तोड़-फोड़ भी हो जाती है।

एक दिवस बस आने ही वाला है – 5 जून, "पर्यावरण दिवस"। यह "पर्यावरण" किस चिड़िया का नाम है। चलो इसे फिर समझेंगे – अभी तो बस इतना ही कि यह दिवस अपने घर की चिन्ता करने का दिन है। अपना घर? हाँ, अपने घर में जितने भी लोग रहते हैं, उनका ठीक प्रबन्ध है या नहीं। सबको खाना-पीना, साफ हवा, साफ पानी, काम के लिए ठीक उजाला, आराम के लिए छाया, हल्ला-गुल्ला नहीं – सब बुनियादी ज़रूरतें पूरी हो रही हैं या नहीं – इसे देखना पड़ता है न? माँ ने जितना खाना बनाया, वह सब सदस्यों में ठीक से बँट जाएगा, ऐसा तो नहीं कि कोई लाड़ला बेटा-बेटी औरों का हिस्सा भी हड़प जाए।

इसी तरह ज़रा अपने स्कूल के बारे में सोचो। जिस कक्षा में हम आज बैठते हैं, उसमें हमसे पहले भी कई छात्र-छात्राएँ बैठे होंगे। इसी तरह हमारे बाद भी हमारी इस कक्षा में हमसे पहली वाली कक्षा के दोस्त आएँगे। उन सबको ठीक बैठने की जगह मिले, रोशनी, हवा, ब्लैक बोर्ड, चॉक, कॉपी-किताब, बिजली-पानी सब उसी तरह मिले, जैसे हमें मिला है। ऐसा न हो कि हम जाते-जाते अपनी कक्षा को इतना बिगाड़ दें कि आने वाली कक्षा उसमें बैठ ही न पाए।

बस समझो यही है – घर यानी धरती का पर्यावरण। हमसे पहले भी कई पीढ़ियाँ यहाँ आई हैं और हमारे बाद भी कई पीढ़ियाँ आएँगी। उन सबके लिए आज हम सबको साफ हवा, पानी, खाना-पीना, कपड़ा, उजाला, बिजली, घर, पेड़, जंगल, नदी, पहाड़, खेत-खलिहान, नीला आसमान और न जाने क्या-क्या, सब कुछ हमेशा ठीक रखना है। मान लो हमारी पीढ़ी ने इस धरती की, अपने इस देश की, अपने शहर की, गाँव की हवा को कारखानों के ज़हरीले धुँए से, ज़हरीली गैस से खराब कर दिया, सारा पानी प्रदूषित कर दिया तो आने वाले क्या करेंगे, कैसे जिएँगे? जगह-जगह बड़े-बड़े बाँध बना दिए, खूब जंगल काट डाले, खेतों का उपजाऊपन नष्ट कर दिया तो आने वाली पीढ़ियाँ क्या करेंगी? कैसे ज़िन्दा रहेंगी?

इसलिए इस बार जब 5 जून, पर्यावरण दिवस आए तो हमारे जीवन को चलाने वाली इन सब बातों को आपस में बैठकर समझो, समझाओ। इस घर की, इस धरती की सुन्दर साज-सम्भाल कैसे होगी यह सीखना होगा हमें। हाँ जो इस धरती को बिगाड़ रहे हैं, पर्यावरण बिगाड़ रहे हैं, उन्हें भी पहचानना होगा, समझाना होगा और ज़रूरत पड़े तो उन्हें सबक भी सिखाना होगा।

अनुपम मिश्र

अनुपम मिश्र मशहूर गाँधीवादी और सक्रिय पर्यावरणकर्मी हैं। आपने जल सहेजने की प्राचीन भारतीय प्रणालियों का गहरा अध्ययन किया है। वर्तमान में आप गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली के पर्यावरण कक्ष के निदेशक हैं।